15199

श्रीसीतारामचन्द्राभ्यांनमः

❀ श्रीमतेहनुमतेनमः ❀

* श्रीमतेरामानन्दायनमः *

15199

श्रीजानकीयशावली

अर्थात्

श्रीरामकान्ता महारानी श्रीजनक-नन्दिनीजी का जन्ममङ्गल बाललीला विवाह विहार बन राज्यतिलकके यशों की पंक्ति।

जिसको

अवधवासी श्रीरामानन्दीय श्रीसीता-रामशरण श्रीरामरसरङ्गमणिजी ने दोहा चौपाई छंदोंसे निर्माण किया।

उसीको

श्रीअवध हनुमन्निवासके महानुभाव श्री सीतारामीय श्रीमती शरण गोमती-दासजी ने छपवायके सज्जनोंके अर्थ सुलभ किया।

"ज्ञानभास्कर प्रेस" बाराबङ्की।

चैत्रशुक्ल सम्वत् १९६० सन् १९०४ ई०

☞ "श्रीभक्तमाल" की टीका और तिलक ॥≡) डाकखर्च ।–

अथ श्रीजानकी यशावली का शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	४	याने	योनि
४	१४	भूपतिवाना	भूपमतिवाना
४	२०	ह्रस्वरोमा	ह्रस्वरोमा
५	१५	भक्तनुग्रह	भक्तानुग्रह
६	१	मिथलेश	मिथिलेश
१०	४	कलुषु	कलुष
११	८	सीताराम	सीतानाम
१६	२५	मनमावत	मनभावत
१८	५	मिथि ला	मिथिला
२०	१८	पौढ़य	पौढ़ाय
२२	१६	खर दूषण	खरदूषण
२४	१	श्यामल	श्यामल
२७	१८	मानन	मान न
३१	१६	गज	जग
३२	२७	ह्य	यह

❀ श्रीजानकीवल्लभोजयति ❀

❀ श्रीमतेहनुमतेनमः ❀

श्रीजानकीयशावली ॥

सो०। श्रीगुरुचरणसरोज, बन्दौंरामानन्दके ॥
मुदमङ्गल प्रदरोज, बोहितसमजगजलधिके
बन्दौं सीताराम, नामरूप लीलाप्रभुत ॥
मांगौंमतिअभिराम,कहौंजानकिजन्मयश ॥
बन्दौंअवधसुधाम, अवधराज परिवारयुत ॥
पुरीसुमिथिलानाम, नृपमिथिलेशसमाजसह
बन्दौं मांडवि भरत कृपाला ❀ पुनिउर्मिलालखनजनपाला॥
बन्दौं श्रुतकीरति रिपुहन्ता ❀ प्रभुप्रियसकल सन्तहनुमन्ता
बन्दौं श्रीगुरु तुलसीदासा ❀ जासुकृपाकछुकाव्यप्रकासा॥
बन्दौं रामभक्ति सरयूसरि ❀ सेवतअमलकरनिदोउमलहरि
बन्दौं वेदरूप रामायण ❀ मुक्तिमुक्तिप्रदकरतपरायण ॥
भए भक्त रघुबरके जेते ❀ हैं अब आगे होइहैं तेते ॥
बन्दौं चरण चहौं बरदाना ❀ देहिंसुमति अतिअहौंअयाना॥
बहुरिबन्दि रघुबर धनुधारी ❀ रचौं जानकी सुयशसुखारी ॥

दो०। सम्बत शतउनईस अरु साठि भाद्रशितपक्ष॥
गुरुदिन तिथिऋषिपंचमीबैठिअवधपुरस्वक्ष॥
श्रीजानकीयशावली नामललितलघुग्रंथ ॥
रचौंमुनिनकृतसुनिसुयशसियापियप्रेमसुपंथ

दो० । प्रथमकहौंरबिवंशतेजिमिनिमिकुलशशिवंश
भयो भनेबाल्मीकिमुनिउत्तरकाण्डप्रशंश॥
भए ब्रह्म अव्यक्तते ब्रह्मा जगकरतार ॥
ब्रह्माके सुत मानसी भये मरीचिउदार १ ॥
सुत मरीचिके कश्यप सुन्दर ❀ कश्यपसुतरबिसबगुणमन्दिर॥
रबिसुत बैवस्वत मनु भूपा ❀ मनुसुत श्रीइक्ष्वाकुअनूपा ॥
सुत इक्ष्वाकु कुक्षि असनामा ❀ जेठ अयोध्याधिपअभिरामा॥
लघु इक्ष्वाकु सुवननिमिनीके ❀ सुगुणतेजनिधिप्रियसबहीके॥
पितुप्रदमहिलहिहिमिगिरिपासू❀ बैजयन्तपुर बिरचे आसू ॥
तहँनिवसेनिमिसहितसमाजा ❀ पालतप्रजाकरतशुभकाजा ॥
पितु प्रसन्नता सुधरम हेतू ❀ किये महामख कारणनेतू ॥
बरेबशिष्ठहिं बरमख काजा ❀ पितापुरोहितगुनिनिमिराजा॥
दो०।निमिसनकहेउ बशिष्ठमुनिनेवतेउ प्रथमसुरेश
इन्द्रयज्ञ करवायपुनितबमखकरबनरेश २॥
तबनिमिकरिगौतमहिंपुरोहित ❀ कियेयज्ञअघअम्बुधिबोहित ॥
बासव मख करवाय बरिष्ठा ❀ निमिनेवतोगुनिमनहिंबशिष्ठा
गे मुनीश तबनिमिगृहमाहीं ❀ तहांसुने सोवत निमिकाहीं॥
मुनिअपमानजानिलहितापहिं❀ दियेसकोपशापनिहपापहिं ॥
निमिकीन्हेउ हमरो अपमाना ❀ तनचेतनबिनहोयनिदाना ॥
गए शापदै मुनियुततापा ❀ जागे निमीसुने गुरुशापा ॥
शापे भूपबशिष्ठहुं काहीं ❀ कोपबिबशतजिक्षमातहांहीं ॥
सोवत महँ शापेउ बिनपापा ❀तुमहुँ लहौमुनितनुबिनुतापा॥
दो० । दोऊतेजप्रभावसम पायपरसपरशाप ।
भेतनुबिनुतबमुनिमहिप पवनमिलितयुततापर॥
देह बिहीन देह के हेतू ❀ गेबशिष्ठ निज पिता निकेतू ॥

विधिपदवन्दिविनयमुनिकीना ❀ प्रभुनिमिशापभयौंतनहीना॥
दुखी पवनतन लहिजियदीना ❀ पुनिदीजिय पितुदेहनवीना॥
बोलेविधि सुनु सुत सिख एहू ❀ मित्रावरुण तेज तन लेहू ॥
योन रहित लहि जन्मकलशत ❀ ममसुत तुमकह वैहौ यशत ॥
सुनिवशिष्ठ बन्दे बिधिकाहीं ❀ गएबेगि बरुणालय माहीं ॥
मित्र देवको तेज बिशाला ❀ खसेउदेवबशकवनेहुँ काला ॥

दो० । सो कंचन कलशहिंधरे लखिउर्वसीरसाल ।
कहेसंगहित सो कहेउ मित्र आइहौंकाल ॥ ४ ॥

आईदेखि बरुण अभिलाषे ❀ उर्बासि मित्र निमंत्रित भांषे ॥
कहेबरुण लखुभाव समेता ❀ तेजतजहिंहमकलशानिकेता॥
तैसहिंकरिगइ मित्रहिं पासा ❀ तिन शापे लहु नरपुर बासा॥
मित्रावरुण तेज यहि हेतू ❀ मिलेउ एकही कलशनिकेतू॥
जन्मे प्रथम अगस्त्य अनूपा ❀ पुनिजन्मे बशिष्ठ तपरूपा ॥
इमिबशिष्ठ दूजो तन पाये ❀तिमिनिमिकथासुनहुँमनलाये
निमितनु धरे सुगन्ध मँगाई ❀ कीन्हे मखपूरण मुनिराई ॥
तबबोले सुर भृगु तपरूपा ❀ कहँ थापैं तव चेतन भूपा ॥

दो० । सुरमुनिवरबरदानसुनि निमिचेतनकहँबैन ।
सबप्राणिनके नयन पर निवसहिं हमसुखऐन ॥
ऐसहिंहोई सुरकहेउ विचरहु पवन स्वरूप ।
पुनिबैठहु बिश्राम हित सबके नयननभूप ॥
सब नरनारिनके नयन अबते परी निमेष ।
निमिकहँ असबरदानदै गवने अमर अशेष ॥
निमितन औषधि डारिमुनिमंत्र पढ़े करिहोम ।
मथतहिं प्रगट्योपुत्र जनु तेजवन्त रविसोम॥५॥

बालककहँ मुनिआशिष दीन्हे ❀ अर्थसहित त्रय नामसुकीन्हे॥
निमितनमथन करतसुतभयऊ ❀मिथिसुनामतेहितेमुनिदयऊ॥
जनमेउ जनकहिंते सुतनीको ❀ ताते जनक नामभो ठीको ॥
चेतन बिना देह ते बालक ❀ भयोविदेहनाम कुलपालक ॥
सबनिमि कुलकी संज्ञा एहा ❀ जानहुमैथिलजनकविदेहा ॥
सब औषधिहैं शशिरस रूपा ❀ औषधि रसते भे मिथिभूपा ॥
ताते रविकुल ते निमि बंशी ❀ चन्द्रबंशभे परम प्रशंशी ॥
गुरु तिय सुतबुधते शशिबंशा ❀ भयो न यह जानहुअवतंशा॥

दो० । निमिकेसुत मिथिभूपभे तासुउदावसु पुत्र ।
नृपतिनन्दिवर्द्धन भये तिनकेपुत्र पवित्र ॥ ६ ॥

तिनके सुवन सुकेतु महीपा ❀ देवरात तिनके कुलदीपा ॥
देवरातहीं काहिं पिनाकी ❀ दिएपिनाकधनुषसुखछाकी॥
तिनके तनय बृहद्रथ बीरा ❀ तिनके महावीर रणधीरा ॥
तिनके सुधृति भूपतिवाना ❀ धृष्टकेतु पुनितासु महाना ॥
तिनके सुत हर्जस्व सुनामा ❀ तिनकेमरुसुतसबगुणधामा ॥
तिनके पुत्र प्रतींधक भूपा ❀ तासुकीर्ति रथतनय अनूपा ॥
तिनके देवमीढ़ महराजा ❀ देवमीढ़ सुत विबुध दराजा ॥
तिनके पुत्र महीध्रक मानो ❀ कीर्तिरात तिनकेसुतजानो ॥

दो० । तासु महारोमा तनय स्वर्णरोम सुततासु ।
पुत्रहस्वरोमा भए तिनके बंशप्रकासु॥ ७ ॥

ह्रस्वरोम के दुइ सुत बीरा ❀ श्रीसीरध्वज कुशध्वजधीरा ॥
जेठे सीरध्वज अनुरागी ❀ मिथिलाभूप भए बड़भागी ॥
जागबालक गुरुज्ञान सुदीन्हा ❀पदुमपत्रसमजगजलकीन्हा ॥
निजसमलहे सुनयना रानी ❀ज्ञानभक्तिसम दोउसुखखानी॥
रत हरि हर पद युत विज्ञाना ❀ प्रजनप्रमोदक धर्मनिधाना ॥
एकसमय युतमंत्रि सुनीशा ❀ बैठरहे निजसभा महीशा ॥

तेहि अवसर आए मुनिनारद ❀ रसिकरामगुणगानबिशारद ॥
सहित समाज उठे महराजा ❀ करि प्रणाममानै कृतकाजा ॥
दो० । सिंहासन बैठाय नृप पूजे सोरह भांति ।
बिनय किए पुनिबिविधिबिधिप्रेममोदमतिमाति ८॥
तब नृपकहेउ जोरि युग हांथा ❀अबसोयतनकहिय मुनिनाथा
जाते सगुण ब्रह्म सुखरूपा ❀ आदिशक्तियुत मिलैंअनूपा॥
सुनिबिदेहके बचन मुनीशा ❀ बोलेबिहँसिध्यायजगदीशा॥
अहो धन्य बड़भागी भूपा ❀ देखनचहौसगुण प्रभुरूपा ॥
सुनहुँ उपाय कहौं सुखदाई ❀प्रथमहिंभजहुशक्तिमनलाई॥
परम शक्ति प्रगटिहि रसरूपा ❀ सोमिलाइहै ब्रह्म अनूपा ॥
संयमयुत इन्द्री बश करिकै ❀नितश्रीबीजजपहुचितधरिकै॥
ध्यावहु आदिशक्ति सानन्दा ❀ गुणातीतसतचितसुखकन्दा॥
दो०।शीतलछबि शशि कोटिशत रबिशतकोटिप्रकास।
सुन्दरि रतिशतकोटि सम बिलसनिब्रह्मबिलास ॥
भक्तनुग्रहकरिणी माया महा अनूप ।
ध्यावहुअस त्रयकोटि श्रीबीज जपहुरसरूप ॥९॥
यहिबिधिते आराधन कीन्हे ❀ प्रगटिहिंसोशक्तिनसँगलीन्हे॥
ललित ललीहोइ सुख सरसाई ❀ बिमल बाललीला दरशाई ॥
सुर मुनि सन्तन हर्ष हुलासा ❀ करी निशाचर बंश बिनाशा ॥
परब्रह्म परपुरुष प्रधाना ❀ परमशक्ति पति रूपनिधाना॥
लैहैं दशरथगृह अवतारा ❀ जनसुखकरणहरणमहिभारा ॥
आपनि शक्ति आयबरिलैहैं ❀ बनिजामात दरश सुख दैहैं ॥
नृपअससुनिपदबन्दनकीन्हा ❀ गए देवऋषि आशिष दीन्हा ॥
भाव भक्तियुत प्रेम महाना ❀ जपे मंत्रतब जनक सुजाना ॥
दो० । जप संपूरण होतहीं भईअमानुष बानि ।

माथनाइ मिथलेशतब सुननलगे सुखदानि १०॥

तुमकर करषन कंचन लांगल ❀ हमप्रगटब मंजुलमख महिथल॥
करब सुपश सुखक्षेम तुम्हारा ❀ दरशाउब निज कान्त उदारा॥
भूपतिभवनजाहुनिजथिरचित❀ प्रेमभक्तियुतहमहिंभजहुनित॥
सुनि नृपवर बरदायनि बानी ❀ सुखफलफलितकृपामृतसानी॥
मुदितभूप निवसे निज गेहा ❀ भजहिंईश्वरीहिं सहितसनेहा॥
उर अभिलाष निरन्तर एही ❀ कबयाउब दरशन छविदेही॥
पालत प्रजा धरमयुत भूपा ❀ तदपिकाल कौतुक द्वखरूपा॥
भयो अवर्षण मिथिला देशू ❀ दुखितभए सब प्रजा नरेशू॥

दो०। सतानन्द आदिक मुनिन पूजेभूपबुलाय।
हर्षद वर्षा होनको बूझेउबिमलउपाय॥ ११॥

कहेउजनकसन सुनिन सहर्षा ❀ यज्ञकरहु होई जल वर्षा॥
ग्रंथ कला सूत्रादि विधाना ❀ यज्ञभूमि शोधहु यजमाना॥
सुनिसुनिगणबाणी नरनाथा ❀ भलेहिंनाथकहिनायउमाथा॥
रचिकांचन हल मैथिल भूपा ❀ किए यज्ञ आरंभ अनूपा॥
बरे बिप्र वर्षा मख काजा ❀ शोधनलगे पूजि महि राजा॥
जानकिजन्म काल सुखमूला ❀ बरणिनजायसकलअनुकूला॥
ऋतुवसन्त फूले बन बागा ❀दशदिशिजनुउमगतअनुरागा॥
गगन बिमल संकुल सुरबृन्दा ❀ गावहिंजानकियशसानन्दा॥

दो०। महीमृदुलभइअमलजलबिकसेकमलतड़ाग।
धूमरहितपावकशिखाज्वलतिजानिनिजभाग॥
योगलगनग्रहबारतिथिसकल भएअनुकूल।
जानिजानकी जन्मजिय अगजगमंगलमूल१२॥

बर बैशाख मास शितपक्षा ❀ मंगल नवमी मघासुऋक्षा॥
सिंहलगन मध्यान्ह रसाला ❀ अभिजितमंजुमुहूरत काला॥

मिथिलाबन कंचनकीखानी ❀ प्रगटीसियप्रगटतजियजानी ॥
मणिगणखानिगिरिनप्रगटानी ❀ शृंगन बिबिधिधातुदरशानी ॥
शीतलमन्द सुगन्ध समीरा ❀ परसि करत सानन्द शरीरा ॥
शक्तिनयुत बिधिहरिहरदेवा ❀ बरषहिं सुमनकरहिंसियसेवा ॥
देवबधू नाचहिं गुणगाई ❀ करत वेदधुनि मुनिसमुदाई ॥
जनक हिए नहिं प्रीतिसमाई ❀ अनायास आनँदउमगाई ॥

दो० । सीरध्वजमहिमंत्रवितशोधिसुहलथिरकीन।
आदिशक्तिप्रगटनसमय समुझेपरमप्रबीन ॥
तब गौतम बोले बचन लेहु जनक भूपाल ।
जपेहुमंत्रताकोसुफलमहिप्रगटतियहिकाल॥
सुनिमुनीशबाणीजनक नेत्रक्षेत्र दिशिकीन ।
रामप्रियाप्रगटनलखे कौतुकसुखदनवीन १३ ॥

हलरेखा मुख बसुधा बिकसी ❀ प्रथम प्रेममयप्रभासुनिकसी ॥
श्वेत छत्र छबि पुनिदरशानी ❀ संग चवँर शोभा सरसानी ॥
शेष शीश सोहत सिंहासन ❀ कंचनरतनरचिततमनाशन ॥
कमल अष्टदल तामहँ सोहै ❀ मध्यकर्णिका भुवनबिमोहै ॥
तेहिपर पराशक्ति रसरूपा ❀ रामप्रिया राजहिं भवभूपा ॥
कोटिरमारति समअभिरामा ❀ बरवयआदिकिशोरीश्यामा ॥
अरुणगौर तनु तरणिलजावत ❀हेमतड़ितशशिशतछबिछावत॥
आनन आन न जेहिसमसोहै ❀ सहजहिं रमाराम मनमोहै ॥

दो० । बरदायकबरबदनछबि बरणतबनत न मंजु ॥
अरुणअधरबिहँसतमनहुँबिकसितसुखमाकंजु १४

नाशा नाशाभरण अनूपा ❀ कलकपोल कुण्डलरबिरूपा ॥
तिमि कानन ताटंक सोहाए ❀ सहसाननसनजाहिंनगाए ॥
कबरी केश रमेशहिं रंगा ❀ चूड़ामणि सुचन्द्रिकासंगा ॥

भाल सुभाग सोहाग सुशाला ❀ तिलकबिन्दु सिन्दूर रसाला ॥
सबकहँ सौंह भौंह अतिबंका ❀ उतपतिथितिलयकरहिंअशंका॥
कृपाकलित कलकंजबिलोचन ❀ रामरसिक भक्तनभवमोचन॥
अंजनश्याम राम मन रंजन ❀ लगेललकिजनुआपनिरंजन॥
इनकी कृपा बिना रघुनन्दन ❀ कबहुँनमिलहिंकलेशनिकंदन॥

दो० । उरभुजकंठअनूपसबभूषणभूषितअंग ।
किमिबरणैरसरङ्गमणितहँनहिंवचनप्रसंग॥१५॥

बसन ब्रह्महीं श्यामल रूपा ❀ परसत तन छबिछाय अनूपा ॥
पद आपदहर सुखद उदारे ❀ देत परमपद ध्यानसुधारे ॥
अंगुलि ललित सुमङ्गलखानी ❀ नखसुखमानहिंजायबखानी॥
लाल कमलसम पदतलप्यारे ❀ रेखकंज आदिक उजियारे ॥
कलनूपुर कलधौत मणीके ❀ मदन मरालनदतजनुनीके ॥
श्यामकंज दहिने करकंजा ❀ बायें मंजु अभयकर पंजा ॥
आदिशक्तिइमिसताचितरूपा ❀ प्रगटीं प्रभा पुंजछबि भूपा ॥
आठौं शुद्धप्रकृति सखिरूपा ❀ कमलदलनपर लसहिंअनूपा॥

दो० । छत्रचवँरयुग व्यजन कर लिये ललित ताम्बूल॥
युगसखिसियपियनामगुणगावहिंसबसुखमूल १६॥

तेजोमय सियसखियुत देखी ❀ भएबिदेह बिदेह बिशेखी ॥
कहिनसकत कछु चितवतठाढ़े ❀ प्रेमानन्द वारि दृगबाढ़े ॥
जयजयजगत जननिमुदमूला ❀ कहिब्रह्मादिकबरषहिंफूला ॥
आयसकल सुर निकट बहोरी ❀ करनलगेअस्तुतिकरजोरी ॥
जय श्रीसीता श्रुतियश गीता ❀ हमबन्दहिंतवपदबहुप्रीता ॥
मायामहा अगुण गुण भूपा ❀ भवभवकारिणिकारणरूपा॥
भूमि तुहीं है भव थिति रूपा ❀ तवपतिरामअनादिसुभूपा॥
तुहीं सकल प्राणिन में प्राणा ❀ राम प्राणपति वेद प्रमाणा॥

दो० । सियश्रीकान्तीधृतिसुमृति श्रद्धामेधारूप ।

क्षमाशान्तिरूपातुहीं तवपतिरामअनूप १७॥
तुहीं अर्द्ध मात्रा ॐकारा ❀ गायत्री वेदन की सारा॥
बिजया जया व्याहृती दाया ❀ इच्छा कीरति लाजअमाया॥
सबजनजननी त्रिभुवनकरणी ❀ विद्या तुहीं अविद्याहरणी॥
जयसीता श्रीबीजनिवासिनि ❀ भजतभक्तभवबीजविनासिनि
तव बिरचित बिधि हरि हरदेवा ❀ इन्द्र अग्नि रबिकरहिं सुसेवा॥
कोउनहिं जानिसकै तव रूपा ❀ कहिनसकै यशनाम अनूपा॥
जगतजननि तवबिभवअनंता ❀ हम सब देवन पावहिं अन्ता॥
राम ब्रह्म पर शक्ति सु एका ❀ तैं विरचसि ब्रह्माण्ड अनेका॥

दो०। निज इच्छाते जगतरचि रहसि अनीहादेवि।
अतिहिंबिचित्रचरित्रतव होइनसकहिं हमभेवि॥
तव गुणरूप प्रभाव सब वेद अगोचरमात।
तुहींनपावसिअन्तनिजऔरनकीकाबात १८

तव पदकमल भजहिं हमसीते ❀ छलतजिकरमबचनअरुहीते॥
कौन पाप अस है बलवाना ❀ जेहिते हमपावहिं दुखनाना॥
कवनहेतु ते हे जगदम्बा ❀ रावण बधमहँ किए बिलम्बा॥
जय श्री परब्रह्म पटरानी ❀ दयावतीसुनि बिनयसुवानी॥
दशमुख दुष्टहिं हनै तुरन्ता ❀ दुखितधेनुद्विजमहिसुरसन्ता॥
यह अदभुत तेजोमय रूपा ❀ सखिनसमेत छिपाउ अनूपा॥
रस वात्सल्य बिभूषित देखी ❀ मानुजनककहँजनकबिसेखी॥
ललित बाललीला बिस्तारी ❀ बनिबालकि बढ़ाउ सुखभारी॥

दो०। असकहिबिधिमिथिलेशसनबोलेसुनहुनरेश
चितचकिताईतजिकरहु अस्तुति प्रेमावेश॥
सुनिबिधिबचन बिदेहतब सावधानसानन्द।
करनलगेकरजोरिवर बिनयनिरखिमुखचन्द

जयजय आदिशक्तिजगमूला ❀ रामानन्द करनि अनुकूला ॥
नमोनमो तन मन बरबानी ❀ तव पद परब्रह्मपटरानी ॥
जे जन तव पद पंकज प्यारे ❀ पूजहिं परम प्रेम उरधारे ॥
तेकुलिकलुषु करम करिनाशा ❀ करहिंसकलसुखधरमप्रकाशा ॥
ज्ञानानन्द सुधा करि पाना ❀ तवपतिप्रेम पगहिंप्रियप्राना ॥
जेध्यावहिं पतियुत तुमकाहीं ❀ निशिदिन प्रेम पगे उरमाहीं ॥
ते विद्या प्रताप कुलकीरति ❀ लहहिंलोकपरलोक परमगति ॥
ब्रह्मरानि जे सुजन तवाश्रित ❀ करुणाबरुणालयाभजहिंनित ॥

दो० । तेदुखदोषबिनाशिनिजसुतसुखसुयशप्रकाश ।
करहिंभुवनबशआपनेभूपतिहोहिंसुदास २० ॥

ब्रह्म प्रिया परमातम संगा ❀ तुमहिंभजहिं जे प्रेम उमंगा ॥
ते कबिता बिबाद जय भारी ❀ लहिजीतहिं कामादिसुखारी ॥
जे परमेश सहित तुम्ह काहीं ❀ ध्यावहिंनिजानिर्मलमनमाहीं ॥
ते कलिमल दुर्बासन दलिकै ❀ भुवनपबित्रकरहिपद चलिकै ॥
जे प्रभुनाम सहित तवनामा ❀ जपहिंनिरूपणकरिसुखधामा ॥
ते सुखसंपति जस यहिलोका ❀ लहहिं ब्रह्मपद थितिपरलोका ॥
जे तवकथा सुधारस पाना ❀ करहिं रामयश सहितसुगाना ॥
ते कुकरम भवदुख करिभञ्जन ❀ पावहिं परमशांति मनरञ्जन ॥

छन्द । रंजन रसाधिपरूप तवरति शतसरिस अभिराम यह ।
निजचित्तजे चिन्तहिं निरन्तर रामके दिशिबाम महँ ॥
ते पाय परमानन्द सुगति अमन्द तजि दुख द्वन्दहैं ।
भवसिंधु तरि हरिधामगत सेवत सदा युग चन्द हैं ॥

सो० । असअस्तुतिसुनिसीय, जगजननीपरमेश्वरी ।
कल कोमल कमनीय, भई बिमलवपुबालिका

पितहिं प्रेमदीन्हेउ करिदाया ❀ मुदमाधुर्य्यमयी मृदुमाया ॥
परम ईश्वरी भाव भुलाई ❀ पागे सुता प्रीति सुखपाई ॥

तब सिंहासन के ढिग जाई ❀ लियोललकि सियअंकउठाई॥
सखिनसहित सिंहासनतबही ❀ छिप्योअवनिअवलोकेसबही॥
तबबोले बिधि बिमल सुबानी ❀ सुनहुँ सुभूप भक्त बिज्ञानी॥
जेहिंप्रथमहिं कमलासरितीरा ❀ जपि श्रीबीजभजेहुमतिधीरा॥
ब्रह्मशक्ति सोई सुख रूपा ❀ प्रगट भई तव भवन अनूपा॥
परब्रह्म प्रभु जगतप्रकाशी ❀ तुमहिंमिलाई चितसुखराशी॥

दो०। सीतानाम अनादिसिधि पै प्रगटीतवधाम।
हलरेखा सीतासुखहिं ताते सीताराम॥
सीकहिएसीमासकल शुभगुणकीअभिराम।
ता तारणि भवसिंधु की ताते सीतानाम॥
षिञवंधने सु धातुते सीतानाम रसाल।
बनततासुभावार्थअससुनहुंसुबुद्धिबिशाल२२॥

अपने शुभस्वभाव गुणमाहीं ❀ बांधति परमातम पतिकाहीं॥
तिमि पतिरूपशील गुणमाहीं ❀ बँधी आपहूं रहैं सदाहीं॥
ताते प्रिय सीता यह नामा ❀ ताप हरन शीतल सुखधामा॥
वर्ण सकार मोक्ष गति रूपा ❀ रमा रूप ईकार अनूपा॥
ताहरिरूप मिलित त्रयसीता ❀ नाम मंत्रसम त्रिगुणातीता॥
सीता सहित रामको नामा ❀ सुमिरत मुक्तिमुक्तिप्रदकामा॥
अससुनाय गवनेबिधि धामा ❀ सकल सुरवरन मन बिश्रामा॥
बैठे जनक सियहिं लै अंका ❀ मानहुँ पारस पायो रंका॥

दो०। तबहिं गगन घनघुमड़िकै बरषनलागेबारि।
भेसब मिथिलादेशके भूपति प्रजासुखारि॥
लहतलोग श्रीरामपद जासुनाम करिजाप।
सोप्रगटीश्रीजनकगृह हरनिसकलजगताप॥२३

छन्दचौपैया ॥

प्रगटी श्रीसीता जनकसुप्रीता परम रामरसखानी ।
पतिप्रेम बिनीता चरितपुनीता गीतायशश्रुतिबानी ॥
बिधिशिवसबदेवा जेहिंपदसेवा करहिंसदासनमानी ।
इच्छातनुधारिणिबिमलबिहारिणिदुखहारिणिजगजानी ॥१
सुरपतिसुरसर्बा मुनिगंधर्बा कहिजयजय श्रीसीता ।
सुमनांजलिबरषैं अतिहियहरषैं दुन्दुभिहनि प्रमुदीता ॥
नाचहिंसुरबामा सबअभिरामा गाययुगल यशग्रामा ।
सियकथासुगंगा मणिरससंगा बरणतललितललामा ॥ २

दो० । अगुणसगुण सुखकारिणी भवतारिणीअनूप ।
निजजनदोषबिसारिणी जयसीता छबिरूप ॥

तब मिथिलेश लली लै गोदी ❀ जेठप्रियापहँ आय बिनोदी ॥
दीन्हे सुता सुनैना अंका ❀ लियोललाकि जनुपारसरंका ॥
सीतासरस रुदनकियो तबहीं❀सुनतहिंजननिपयदपयश्रवहीं ॥
सियहिंबिलोकिबढ़ीअतिप्रीती ❀ पगेप्राण बत्सल रसरीती ॥
आए अन्तहपुर ते राजा ❀ कहे बजावन मंगल बाजा ॥
बाजा बिबिधि बजनिहा बृंदा ❀ लगे बजावन मनसानन्दा ॥
लागीं नाचन नटी नवेली ❀ तरलतान गावहिं अलबेली ॥
मागध सूत बंदि नटगायक ❀ निमिकुलयशगावहिंसुखदायक॥

दो० । ध्वजपताक तोरणकलश राजमहल बहुराज ।
मंगलमय मिथिलापुरीभवनभवन तसभ्राज ॥ २४

प्रगटी जनकलली सुखदाई ❀ मिथिला घरघर बजत बधाई ॥
सहज सिंगार किए बर नारी ❀ चलीं लिए कर मङ्गल थारी ॥
गावत राजमहल महँ आईं ❀ लखत लली मुख सुख उरछाईं ॥
निउछावरि करि देहिं असीसा ❀ जिए सुता शत लाख बरीसा ॥
सरस राग सुख सोहिल गावैं ❀ नाचैं मधुर मृदङ्ग बजावैं ॥

केसर रङ्ग भरी पिचकारी ❀ मारहिं यक एकन नर नारी ॥
मृगमद अगर कपूर सु धूरी ❀ भरहिं गुलाल अबीर सु भूरी ॥
ब्रह्मानन्द मगन नर नारी ❀ भए बिदेह स्व देह बिसारी ॥

दो०। जागबलिकगौतमअशितसतानन्दमुनिआदि।
सबहिंकनककमणिधेनुबहुदिएजनकअहलादि॥२५॥

देहिं असीस मुनीश अघाई ❀ पढ़हिं सुमङ्गल शांति सोहाई ॥
अन्न कनक मणि बसनअनूपा ❀ दिए लुटाइ यांचकन भूपा ॥
रथ गज बाजि ग्राम गो रूरी ❀ बसन कनक मणि भूषण भूरी ॥
सूत बन्दि नट नटी समाजा ❀ दै दै सब परितोषे राजा ॥
मुदित नारि नर मिथिला बासी ❀ लगे लुटावन सब धनरासी ॥
जाँचक लेत देत पुनि औरहिं ❀ लेत लुटावत सोउ तेहिं ठौरहिं॥
बिधि शिव इन्द्रादिक सुरबृंदा ❀ सकलमनुजतनु धरि सानन्दा॥
रमणिन सहित नेह सुखफूले ❀ मिथिलागलिनफिरहिंतनभूले॥

दो०। यहिबिधिजानकिजन्मजसमंगलमहाउछाह।
कहिनसकहिं रसरङ्गमणि श्रुति शारद अहिनाह ॥

दान मान दै मुदित बिदेहू ❀ छाके लली उछाह सनेहू ॥
बैठ बालिका बदन निहारहिं ❀सियहिंसुनयनासहितदुलारहिं॥
तेहि अवसर नारद मुनिआए ❀ करत राम गुणगान सोहाए ॥
उठेजनक लखिसहित समाजा ❀ बन्देपद रानी युत राजा ॥
सियहिं उठाय प्रणाम कराए ❀ लीला लखि ऐश्वर्य्य भुलाए ॥
दिये मुनीस असीस बिसेखी ❀ बड़भागी भूपहिं हियलेखी ॥
मुदित महिप मुनिपायँ पखारे ❀ सादर सिंहासन बैठारे ॥
पूजे बहुबिधि मुदित महीशा ❀ कहे भयौं मैं धन्य मुनीशा ॥

दो०। सुनि मुनिकहे नरेशसन हमहूं धन्य बिदेह।
जगजननीके जनक तुम पूजेहु जेहिंकरि नेह॥२७

सुनि सीरध्वज प्रेम प्रमोदी ❀ सीतहिं बैठाए मुनि गोदी ॥
कहकरजोरिसुनियमुनिनाथा ❀ कहिय लली लक्षणलखिहाँथा॥
कहमुनि सुनहुँभूप सुखछाके ❀ लोक बिलक्षण लक्षण याके ॥
कहँलगि कहौं सुता प्रभुताई ❀ बिधिहरिहर बन्दित पतिपाई॥
सीरध्वज तव सुता पताका ❀ भईकरनि कुलकीरति साका ॥
सीता सीतल क्षमा क्षमाकी ❀ स्वामिनि शारद उमारमा की ॥
भजत चरनजनभवभयभानी ❀ सातद्वीप महि मंडल रानी ॥
रतिशतसमसुन्दरि शुभशीला ❀ दयावती युतललितसुलीला॥

छन्द। लीलासुलोनी करनिकलमहिमा महोदधि मानकी।
मिथिलामहीभव मंजुमणि परशक्ति पुरुषप्रधानकी ॥
पूजितपरम हन्सादि पद प्रदपरमपद निर्बानकी।
जगबन्दिता रसरङ्गमणि जगदीश्वरी यहजानकी ॥

सो०। जानहुजनक जनेश,जननीजगदानन्दकी।
कहिनसकैंशिवशेष,याकेलक्षणगुणसुयश ॥ २८

बिदित बिश्वबिजयी यकबीरा ❀ पैहै रमण महा रणधीरा ॥
श्यामकाम शतसम अभिरामा ❀ रूप सच्चिदानन्द सुधामा ॥
जगतबंद्य जगपूज्य प्रतापी ❀ दुष्टदलन सुरमुनिसुखथापी ॥
कृपासिंधु जनबंधु उदारा ❀ अधमउधारण हरणबिकारा ॥
पतिब्रता चूड़ामणि सीता ❀ असपतिलहि सेइहैबिनीता ॥
बसिहिं मुक्तिदायक पुरमाहीं ❀ बैकुण्ठादिक बन्दत जाही ॥
पैहै ससुर सुरेश सहायक ❀ चक्रवतीपद पालक लायक ॥
लहिहै देवर तीन दुलारे ❀ ललितभाविभगिनिनपतिप्यारे॥

दो०। यहिकहँ साढ़ेतीनसै सासुसहित परिवार।
प्रेमिनिपुत्रीतेअधिक करिहैं प्यारदुलार ॥ २९

निजसुखतजिपतिसुखयशदेनी❀ रमण प्राणमन बशकरलेनी ॥
बनबिहार बहुलीला कारिणि❀सुरनरमुनिजनमहिदुखहारिणि ॥

पति पितुबंश प्रशंस पताका❀सुयशसुकीरतिजिमिशशिराका॥
सीता नाम अर्थ युतठीका ❀ सोममपिता सुनाए नीका ॥
मघानखतके दुसरे चरणा ❀ प्रगटीसुता सहज मनहरणा॥
मीन मंजु नैना रसधामा ❀ जानहु जनकराशिकरनामा॥
धन्यधन्य तुमजनक महीपा ❀ असतनया पायहु कुलदीपा॥
धन्यतुम्हारि नारि कहिनारद ❀ सुतासुनयनहिंदिएविशारद॥

दो०। राजहिंरानिहिंराजपुर सियहिंसहितपरिवार।
दैआशिषा प्रशंसिमुनि गए ब्रह्म आगार ॥ ३०

जबते प्रगटि पुत्रिका प्यारी ❀ तबते मुदित सकलनरनारी ॥
नृपगृह नाचहिं मंगल गाई ❀ बाजत अति आनन्द बधाई ॥
लखिउछाह रविरथ थकिगयऊ ❀गासदिवसकरदिवससोभयऊ॥
प्रभुप्रेरित पुनि चले दिनेशू ❀ मनहिं प्रशंसत सिया नरेशू॥
होत गान आनन्द बधावा ❀ सुन्दर सिया छठी दिनआवा॥
नाच गान युत बाजे बाजा ❀ छठी साज सजवाये राजा॥
आए गौतमादि मुनि बृन्दा ❀ पढ़हिंसुवेद शान्तिसानन्दा॥
फल फूलादिक साज मँगाए ❀ माणिमोतिन मयचौकपुराए॥

दो०। ध्वज पताक गृहगृहसजे रोपे कदली द्वार।
मंगलमय चित्राम लिखि बांधे बन्दनवार ॥
नभसुरबर दुन्दुभिहने गायनटहिं सुरनारि॥
हियहर्षहिंबर्षहिंसुमनजयजानकीउचारि३१॥

मुनिगण देबी देव पुजाए ❀ लोकरीति कुल तियनकराए॥
द्विजनदान दिय भूप उदारा ❀ पहिरावन अरु नेग अपारा॥
पाइजहां तहँ देहिं आसीसा ❀ कन्या चिरजीवै जगदीशा॥
छकी छेम छबि सिया छठीहै ❀ मानहुँ मंजुल मोद मठी है॥
मिथिला ललित उछाहगठीहै ❀ मुनिगण मंगल शांतिपठीहै॥

सियाछठी लखि प्रीतिसुपागीं ❀ युवतींयामिनिजागनलागीं ॥
नहिंजागे असको हतभागी ❀ आपुहिं नीदभामिनी जागी॥
नारि परस्पर नात लगाई ❀ ब्यंग गारि देतीं बहु गाई ॥

दो०। शितचौदसिबैसाखकीछिटकीचांदिनिराति।
सियाछठीरसरङ्गमाणिसुखउमगतिसबभांति
कहिजयजयश्रीजानकीजगजननीसुरबृन्द।
गवनेनिजनिजधामसबब्रह्मादिकसानन्द३२

नित उतसव आनन्दअनूपा ❀ निशिदिनजातनजानतभूपा॥
बिदित जेठ बदि पंचमि आई ❀ सियबारहौं दिवस सुखदाई ॥
चढ़े बिमान बिबुधबर बृन्दा ❀ पुर ऊपर आए सानन्दा ॥
मिथिला घरघर बजत बधाई ❀ राजमहल मंगल अधिकाई॥
सींच सुगन्धन गली बजारा ❀ चौकैं रचे दुआर अगारा ॥
गौतम सतानन्द सानन्दा ❀ आए संगलिए मुनि बृन्दा ॥
बन्दे पद बिदेह सबही के ❀ दिएसबहिं आसनअतिनीके॥
सियहिंउबटिउरअतिसुखपायो ❀ नाउनि नेह सहित नहवायो॥

दो०। लगी करन शृंगारसो सुरसबभाग सिहाहिं।
हनिदुन्दुभिबरषहिंसुमनहरषहिंअतिमनमाहिं

केश कुटिल कारे सुकुमारे ❀ सुरभित तैल लगाय सँवारे ॥
कंचनसूत कलित कलकुलही ❀जनुघनपरथिरदामिनिउलही॥
अंजन रंजित अखियां सोहैं ❀ वंकभृकुटियां जन मनमोहैं॥
नाशाललित अधर अरुनारे ❀ हँसतदशनदमकतअतिप्यारे॥
गोल कपोल चिबुकमनमोहैं ❀ लघुमणि कण्ठ विभूषणसोहैं॥
झीनझँगुलिया तन छबिकारी❀ पंकजपाणि पहुँचियांप्यारी ॥
चरण अंगुलिन नखयुत जोती❀ कमलदलनबिलसैंजनुमोती॥
करत मधुर धुनि नूपुर नीके ❀ मनमावत रसरङ्ग मणी के ॥

दो०।सियशिशुतनशृंगारकरिनाउनिनयननिहारि।
जन्मसुफल निजलेखिपुनि आपुगईबलिहारि॥
निमिकुलराज नहाय नव युग पीताम्बरधारि।
सहितसुनयनाचौकपर बैठेआसनमारि ३४॥

शोभित सिया मातुके अंका ❀ थिरदामिनिजनुलियेमयंका॥
सतानन्द शुभ कर्म कराए ❀ देवी देव सप्रेम पुजाए॥
ब्रह्मा नारद नाम जे भाखे ❀ तेइपुनि नामकरण महँ राखे॥
सीतानाम प्रसिद्ध सुखाकर ❀ मीनमंजु नयना सु राशिकर॥
नामसुनतसब जय जय कीन्हे ❀ सीतहिंसुखद आशिषादीन्हे॥
मुनिन दक्षिणा दीन महीशा ❀ आशिष लहे नायपद शीशा॥
याँचक नेगिन जो जेहिंभावा ❀ सोसोइ पाय अशीश सुनावा॥
सिय बरहौं बारहौं बिभाकर ❀ बिकसेलखिसरोजनरमुनिवर॥

दो०। नामकरणउत्सवकिएसियकोजसमिथिलेश।
तसनसकैंरसरङ्गमणि कहिकबिशारदशेश३५॥

आयो परम मनोहर पालन ❀ रचितबिचित्रकनकमणिजालन
तापर ललित ललिहिं पौढ़ाई ❀ गावहिं मातु मल्हायझुलाई॥
शुभगसेज महँ कबहुँ समोदा ❀ माता लसहिं लली लै गोदा॥
कबहुँ पौढ़ि पय प्यायसप्रेमा ❀सियमुखलखहिंछकी सुखछेमा॥
कबहुँउबटि अन्हवायसिँगारी ❀निरखि सुनयनानयनसुखारी॥
कबहुँकिलकिललिबालउमङ्गन❀जानुपाणि धावहिंमणिअङ्गन॥
करगहि माताचलनसिखावति❀ चुटकी करनबजायनचावति॥
कबहुँ जनकलै लली सुअङ्का ❀ दुलरावहिं लखिसुसुखमयङ्का॥

दो०। सियअसबालबिनोदकरि मातुपितहिंसुखदीन्ह।
तब भूपति अति प्रीतियुत अन्नप्रासनी कीन्ह ३६॥

शुभ सिय बरषगाँठि दिन आयो❀ अति उछाह नरनाह करायो॥

जबसियजन्मनखतदिनआवहिं ❀ तबहिंउछाहजनककरवावहिं ॥
कछु दिन गए सुनयनारानी ❀ जन्मीसुतासुछबि गुणखानी ॥
भूपति अति उछाह करवायो ❀ मुनिन उर्मिला नाम धरायो ॥
पुनि तेहिकाल कुशध्वज गेहा ❀ प्रगटीं युगल सुता छबि देहा ॥
मंगल महँ मंगल प्रगटाना ❀ महामोदमिथि लाअधिकाना ॥
नाम माण्डवी जेठ कुमारी ❀ श्रुतिकीरतिलघुलली सुप्यारी ॥
चारुचन्द सम चारौ बहिनी ❀शीलसुभावसुछबिगुण गहिनी ॥

दो० । सखी सदाकी सेवकी सीता अंश स्वरूप ।
जनमीं बहु निमिबंशमहँ तिनमहँ अष्टअनूप ॥
चारु सुशीला लछिमना शुभगा मदन कलाम ।
चन्द्रकलाबिमलाकृपाकमलादिक छबिधाम ३७॥

सियजू सखिन सङ्गसुखरूपा ❀ खेलहिं बालकि खेल अनूपा ॥
पुतरा परम मनोहर श्यामा ❀ गुड़िया गोरीबहु अभिरामा ॥
दिए बिदेह सियहिं बनवाई ❀ तिनसोंकरहिंबिवाह सगाई ॥
गौर सु गुड़वा श्याम पुतरियां ❀ दिएउर्मिला कहँमनहरियां ॥
श्रुतिकीरतिमाण्डबिहिंपुतरियां ❀ दिए उर्मिलासियअनुहरियां॥
चारिउ कुँवरि परसपर ब्याहा ❀ करहिंमचायअनन्दउछाहा ॥
सतानन्दआदिकमुनिआवहिं ❀ पुत्रिन परमसप्रेम पढ़ावहिं ॥
नृत्यगीत आदिक गुण जेते ❀ सिखेसियासखिबहिनिसमेते॥

दो० । बहुखगमृगशुकसारिका सियकेखेलनकाज ।
दिए बिदेह सनेह बश नित सब सुखी समाज ३८॥

एक समय आनँद उरछाए ❀ नृपगृहपुनिनारद मुनिआए॥
भूपति चरण बन्दि बैठाए ❀ पूजनकरि बर आशिष पाए ॥
चारहु ललिन प्रणाम कराए ❀ मंजु मुनीशअशीश सुनाए ॥
बोले तब बिदेह कर जोरी ❀ माथ नायनारदहिं निहोरी ॥
नाथसुना सीताबड़ भागिनि ❀गयोभगिनीप्रीति सुपागिनि ॥

कहिए कछू उपाय कृपाला ❀ जाते पति पावै जसजाला ॥
कह मुनि यह उपाय प्रदछेमा ❀ शिवधनु नित पूजै युत प्रेमा ॥
शिवधनुकहँ जो नितशिरनैहैं ❀ तौ भगिनिहुँ समान पतिपैहैं॥

छ० । पैहैंसमानस्वभावशीलसुजानसुन्दरपतिसबै ।
सुखसुयशदैहैं तुमहिं तवकन्यासुपतिलैहैंजबै॥
दुइगोरश्यामाकिशोरदूलहगाधिसुतइतल्याइहैं।
पीछेपरमसुंदरकुवँरयुगनिजजनकसँगआइहैं ॥

सो० । बिरचीजेहिकरतार चारिसुता मिथिलेशतव ।
सोइ करतार उदार बिरचे चारि कुमार बर ॥

दो० । असकहि नारद भे बिदा नाए नरपति शीश ।
दै अशीष रसरङ्गमणि मुनि सुमिरत रघुईश ॥

तबते जानकि प्रात नहाई ❀ बहिनिन युत धनु मन्दिर जाई
कंचन वेदी तहँ नित झारैं ❀ चाप पूजिकरि प्रणति पधारैं ॥
एक दिवस वेदिका बहारी ❀ चाप तरे रज कछुक निहारी ॥
धनुषउठायअनत धरिदीन्हेउ ❀ वेदीझारि धोयशुचि कीन्हेउ ॥
निमिकुलपतिनहायतेहिकाला❀ गे धनुमन्दिर लखिधनुहाला॥
पूछे पुत्रि पिनाक और थल ❀ को धरिदियो उठाय महाबल॥
सियकह धनु नीचे रज देखी ❀ झारनहित मैं धरेउँ बिशेखी ॥
जनक कहे पुनि तहँ धनुथापे ❀ सिय उठाय धरिदीन्हेउ चापे ॥

दो०।जोहिजनकबिस्मितमहा प्रणकरिदियोतहांहिं।
जोशिवचाप चढ़ाइहै दैहौं सियतेहि काहिं४० ॥

सियधनुपूजि पितहिंशिरनाई ❀ गई गेह सँग भगिनि लेवाई ॥
सखिभगिनिनलैप्रातहिंसीता ❀ चढ़ी पालकिनजाहिं सप्रीता ॥
कमलासरिमहँ करिअसनाना ❀ बिप्रनदेहिंबिविधिबिधिदाना ॥
शिवधनुपूजिजननिढिगढरहीं ❀ सहित समाज कलेऊ करहीं ॥

चढ़ि पालकिन बिदेह दुलारी ❀ सब गवनीगिरिजा फुलवारी ॥
शर मज्जन करि पूजि भवानी ❀ आईं बाग देखि हरषानी ॥
मालिनि माली मंजुल डाली ❀ सुमन बिभूषण शौरभसाली ॥
ल्याय ललिन पहिराय सप्रेमा ❀ लखि छबि लहे रंक जनु हेमा ॥

दो० । चढ़ननपायोपहरदिन मुदित सुनयना माय।
स्वकर कलेऊकरि ललित दिए सप्रेम पठाय ॥
दासी धाय सु धाय सब ललित ललिन लैअङ्क।
भोजन करवावतभईं लखिलखि सुमुख मयङ्क ॥

मेवा मधुर मंजु फल खाई ❀ अचवन करि पुनि बीरी पाई ॥
करिचरणन नूपुर झनकारी ❀ देखन लगीं फैल फुलवारी ॥
तबहीं आय लियो बलिहारी ❀ सिय सुमातु प्रेषित प्रतिहारी ॥
अम्ब बुलायो सुनिसियप्यारी ❀ बहिनिनसखिनसमेतपधारीं ॥
आईं महल आरती कीन्हे ❀ जननीजनकगोदभरिलीन्हे ॥
चरणधोय पीढ़न बैठारी ❀ करत करावत कल जेवनारी ॥
मन रंजन व्यंजन बहु भांती ❀ छरस रसोई छप्पन जाती ॥
भोजनकरि बिधु आननधोई ❀ पुनि पानन पाए सबकोई ॥

दो० । लिए अम्ब परजङ्क पर अंकन लली ललाम।
लखि मुख पुनि पोढ़य कछु करवाये बिश्राम ॥
उठिशुठिसुन्दरसियबदनधोयपोछिकछुख्याय।
प्यायसलिलशृङ्गारकरिपेखहिंपानपवाय ४२ ॥

बैठि कुँवरि कल यंत्र सुधारी ❀सियगावहिंनाचहिंसखिप्यारी॥
गाय बजाय लहीं अलबेलीं ❀ आईं अम्बन पहँ मुदबेलीं ॥
तब संध्या करि जनक नृपाला ❀आयललिनलखिभएनिहाला॥
लिएसियहिंनृप अंकसचयना ❀तिमिलीन्हेउउर्मिलहिंसुनयना॥
मांडवि श्रुतकीरति कहँगोदी ❀ और रानि लीन्हे मनमोदी ॥
पुत्रिन प्रेम समेत दुलारी ❀ बदन चूमि करवाय बियारी ॥

15-199

शुभग सुसेजन शयन कराए ❀ आपहुँ किए शयन सचुपाए ॥
बंदिगानसुनिसिय पितुमाता ❀ जागिजगावहिंललिनप्रभाता ॥

दो० । जनकसुनयनाजामबसु सेवहिंसियहिंसप्रीति।
जातनजाननिशिदिवसगहिवत्सलरसरीति ४३

सियशुभचरितदेखि मनहारी ❀ सुखी मातु पितु सब नरनारी ॥
सुता वपुष बर बाढ़निहारी ❀ जनक स्वयंबर कियो बिचारी ॥
आपन प्रण कहि नृपनबुलाई ❀ धनु न उठेउ सब गए लजाई ॥
पुनि घेरे मिथिला अघकारी ❀ जनक नृपन कहँ डारे मारी ॥
साङ्काशीको भूप सुधन्वा ❀ बरजोरी मांगै शिव धन्वा ॥
जनकयुद्धकरितेहिंबधकीन्हा ❀ तासुराज्य कुशकेतुहिं दीन्हा ॥
बल बिहीनसबनृपन बिलोकी ❀ भए जनककछु हिएसशोकी ॥
सुमिरेविधि नारद सियबानी ❀ तब धनुयज्ञ रचे बिज्ञानी ॥

दो० । नेवताए सब मित्रसुनि सुनि आए हरषाय ।
सतानन्द सन कौशिकहिं बुलवाए चितचाय ॥
कौशिक कौशलपति कुवँर दुइ बर लाए मांगि ।
बधवाएऋषिमषकिएचलेजनकसुखलागि ४४ ॥

राम लखन चलिकौशिकसाथा ❀ अघिनि अहिल्या तारेनाथा ॥
गंग नहाय जनकपुर आए ❀ दरशनलहिसबलोगलोभाए ॥
बाग बिदेह सुता लखि लोभे ❀ रूप लखाय लली मन क्षोभे ॥
मुनि सँग रङ्गभूमि प्रभुराजे ❀ बलप्रताप लखिसबनृपलाजे ॥
गुरुआज्ञालहि भव धनु भंजे ❀ उरजयमाल पहिरि सिय रंजे ॥
लै बरात कौशलपति आए ❀ मिले परसपर अतिसुखपाए ॥
सियमांडवि उर्मिला सुकीरति❀रामभरतलछिमनरिपुहनपति ॥
चारौ कुवँरि कुमार बिवाहू ❀ भयो भुवन भरि रहा उछाहू ॥

दो० । दुलहिनि दूलह एकसम समसमधीपुरराज।
समगुणरूपसमाजसम सीतारामसुभ्राज ४५ ॥

चारिउभाइ बियाहि सोहाए ❀ पितुबरातयुत अवधहिंआए ॥
सुखसमाजयुत अवधअगारा ❀ कीन्हे सीताराम बिहारा ॥
ऋतुबसन्त दोउ रसिकउदारा ❀ बनप्रमोद बिच करत बिहारा ॥
श्यामगौर सियरघुबर जोरी ❀ भरि रसरङ्ग सुखेलत होरी ॥
ग्रीषमऋतुकरि सुमन सिँगारा ❀सियपियबिलसतसुमनअगारा॥
चलतफुहार बहार बिलोकी ❀ राजत सीताराम विशोकी ॥
पावस ऋतुमहँ प्रीतम प्यारी ❀ झूलत गावत राग मलारी ॥
शरद चाँदनी चटक निहारी ❀सियपियविपिनप्रमोदबिहारी॥

दो०। ऋतुहेमन्तहुँ शिशिरमहँ महलमध्य परयंक ।
सियरघुबरबिलसतसुखी बिहँसितबदनमयंक ॥
बीते बारह बरष इमि सरयू तीर अगार ।
सियरामहिंरसरङ्गमणिकरतअखंडबिहार ६४॥

लखन राम सियमुनिसुखदाई ❀ बसेचित्रकूटहिं पुनि जाई ॥
अत्रि दरशकरि बधे बिराधू ❀ मिलिसरभङ्ग सुतीक्षण साधू ॥
ऋषिअगस्ति लखिगीधहिंभेटी ❀ बसे पंचबटि मुनि दुख मेटी ॥
सूपनखहिं कुरूप करि मारे ❀ खर दूषण आदिक बलभारे ॥
गवनेराम कपट मृग मारण ❀ लखनगएसियकटुबचकारण ॥
तब छाया मायामय सीता ❀ रावण कालबिबशअविनीता॥
हरेउ जटायू हति मतिहीना ❀ गीधहिं रामपरमपद दीना ॥
शवरिहिंगतिदैमिलिहनुमानहिं❀ किएसखासुग्रीवस्वप्राणहिं ॥

दो०। रघुबर बालिहिं बधिकिए सुग्रीबहिं कपिराज।
हनुमत सीतासुधि दिए गवने सहित समाज४७॥

राघवशरण बिभीषण लीन्हा ❀सचिवनसहितअभयपददीन्हा ॥
क्षोभि सिन्धु नल सेतु कराए ❀ धरिशरधनु प्रभुलङ्कहिआए॥
लछिमन मेघनाद संघारे ❀ कुंभकरण रावण प्रभुमारे ॥
दलयुत रिपु हति सीतालीन्हे ❀ राजा लंक बिभीषण कीन्हे ॥

सुरमुनि धेनु अभय सबपाए ❀ प्रभुपुष्पकचढ़िअवधसिधाए॥
यहि बिधि सीता कृपा प्रभावा ❀ सबजगशान्तभयोसुखछावा॥
शक्तिरहित रामहुँ महराजा ❀करिनहिंसकहिंकछुजगकाजा॥
शक्तिचेतना युत तन प्यारो ❀ अहैशक्ति आश्रितजगसारो॥

दो०। शक्तिसहितरामहिंभजै प्रभुबिनशक्तिअशक्त।
शक्तिमानप्रभुबिनकबहुं शक्तिहुँभजै न भक्त॥
आयअवधसानुज भरत भेटेरामकृपाल।
गुरुपुरजनजननिन्हमिले अमितरूपप्रभुहाल॥
रामराज अभिषेक हित सचिव सजाए साज।
चहुँसमुद्रनदनदीजलदियमँगायकपिराज४८॥

सेवक सब प्रभु आयसु पाए ❀ सुग्रीवादि सखन नहवाए॥
भरतहिं राम अंक बैठारे ❀ निजकर कंज जटा निरुवारे॥
तीनौं भाइन नेह समेता ❀ नहवाए प्रभु कृपानिकेता॥
आप जटा बिबराय नहाए ❀ बसन धारि चन्दनलगवाए॥
सब अंगन मणि भूषण साजे ❀ कामकोटि शोभालखिलाजे॥
सियहिंरामजननिन्हअन्हवाई ❀ बसनबिभूषण बिरचिबनाई॥
रघुबर बामभाग बैठारी ❀निरखिजन्मनिजसफलबिचारी॥
रामरूप लखि गुरु सुख पाए ❀ दिव्यसिँहासन तुरतमँगाए॥

दो०। राजसभाके मध्यबर सिंहासन धरवाय।
बैठारे सीतासहित रामहिं गुरु हरषाय॥
राजतिलक श्रीरामको प्रथमहिं किए मुनीश।
वेदमंत्र अभिषेकके पढ़ि द्विज दिए अशीश ४९॥

राज्यासन पर राम निहारे ❀ ब्रह्मादिक जयजयति उचारे॥
सुरतरुसुमनहरषिहियबरषहिं ❀हनिदुन्दुभिप्रभुशोभानिरखहिं॥
नाचहिं देववधू यश गाई ❀ सियरघुबरछबिलखहिंसोहाई॥

श्यामल रूप सुभाय सोहावन ❀ नीलकंजमणि मेघलजावन ॥
शिरमणिजटितमुकुटदिनकरसम ❀ मनुहितरचेबिरंचिमनोरम ॥
आनन समउपमाजगआनन ❀ जाको यश गावतसहसानन ॥
भाल बिशाल तिलकअतिराजै ❀ कुंचितकेशनिरखिअलिलाजैं ॥
अतिबिशाल राजीवबिलोचन ❀ भृकुटिवंक चितवतभवमोचन ॥

दो० । कुण्डलकलितकपोलकलनाशाशुकबिलखात ।
बरषतसुखरसरङ्गमणि बदनसहजमुसक्यात५०॥

लंबितभुज आजानु उदारा ❀ उरकपाट जनुसुछबिअगारा॥
त्रिबली उदर नाभि गम्भीरा ❀ ललित लंक ऊरू पट पीरा ॥
जानुजंघ बल रंभ निधाना ❀ गूढ़गुल्फ गति सिंहसमाना ॥
पदपंकज अतिअधम उधारी ❀ तोड़ा तड़ितबरन मनहारी ॥
अंकुशकुलिशकंजध्वजआदिक❀चारुचिह्न ध्यावतसनकादिक ॥
धरे पदिक कण्ठा मणिमाला ❀ अंगदादि सब भूषणजाला ॥
महाबाण दक्षिण कर राजै ❀ दिव्य धनुषबांए छबिछाजै ॥
कंचनयुत पट लसत सुरङ्गा ❀ रूपबसै हिय माणि रसरङ्गा ॥

दो० । बामभाग राजैं सिया गौरांगी छबिखानि ।
युगलस्वरूपअनूपअतिशेषनसकाहिंबखानि॥

लखनलिए शित छत्र सोहावैं ❀ भरत शत्रुहन चवँरडुरावैं ॥
युगलब्यजन सुकण्ठहनुमाना ❀ लिए बिभीषण चर्मकृपाना ॥
नीलशक्ति अंगद धनुबाना ❀ निरखहिंछबिनलादिकपिनाना॥
नानादान सकल द्विज पाए ❀ यांचक पटभूषण मनभाए ॥
सखा सचिव योधा पुरवासी ❀ नजरनिछावरि करींहुलासी॥
सुत बिलोकिलोचनफललीन्हे ❀ पुनिपुनि अंबआरती कीन्हे॥
कंचन कंजमणिन जटि माला ❀ दूसर मुक्ताहार बिशाला ॥
पठए इन्द्र पवन के हाथा ❀ सो रामहिं दै नायो माथा ॥

दो० । रामराज अभिषेकसुख शोभा सरस समाज ॥

बरणिसकैं नहिंशारदा शिवगणपतिअहिराज ॥
सुग्रीवहिं मणिमाल शुभ अंगद अंगदकांहि ।
दीन्हे मुक्ताहार बर रघुबर सिय गलमांहि ॥
सियजू बर भूषण बसन हनुमन्तहिं दैफेरि ।
दीन्हेउमुक्ताहारसोइ लहिआज्ञा प्रभुकेरि ॥५२॥

बन्दीदेह वेद सब आए ❀ श्रीराजाधिराज गुण गाए ॥
महाराज श्रीराम उदारा ❀ दीन्हे दान मान सतकारा ॥
मणिरसरङ्ग सिया यश गाई ❀ माँगेउ भक्तिदानललचाई ॥
कृपादृष्टि करि भवभय मोचन ❀ दिएराम राजीव बिलोचन ॥
तब प्रभुदरशन हित शिव आए ❀ बिनतीकरिलहिभक्तिसिधाए
राम कपिन सुखबास देवाए ❀ सबनिवसेप्रभुप्रीतिसुछाए ॥
राम लखन सन कहे सप्रीती ❀ पदयुवराज लेहु युतनीती ॥
लिए न लखन राज कर काजा ❀ भरतहिंराम कियेयुवराजा ॥

दो० । अवधप्रजा निजपुत्रसम पालत कृपानिधान।
भरतलखनरिपुहनसहित भवनबसतभगवान ५३॥

जय जय सीताराम कृपाला ❀ जयतिजानकीरामदयाला ॥
जय अभिराम कोटि रतिकामा ❀नवकिशोरप्रभुसियजूश्यामा॥
जयरघुवीर बीररस बारिधि ❀जयसियजूसुकुमारिसुगुणनिधि॥
जय धनुधारी अवध बिहारी ❀ जय रघुबरप्यारी सुकुमारी ॥
जयति रामसाकेत बिहारी ❀ सीतापतिजनमन बसकारी॥
जयश्री जनकलली रघुनायक ❀ रामनामजपप्रीति सुदायक ॥
जय श्रीसियाराम सुखरासी ❀ जय रसरङ्गमणी मन बासी ॥
रामप्रियाको सुयश सुहायो ❀ जनरसरङ्गमणी यह गायो ॥

छं०ह० । गायोगवायोगिराप्रेरकपरमप्रभुश्रीरामहैं।
रघुबरहिंप्रियासियसुयशासियप्रिय रामकेयशनामहैं

सियजन्मबालचरित्र अद्भुतशम्भुधनुष उठावनो ।
संक्षेप ब्याह बिहार वर बनवास मुनिजन भावनो ॥
मायामयी सियगवन लङ्का सकुलरावण नाशको ।
खलबधि अवधआगवनप्रभु भरतादिमिलनहुलासको
श्रीरामसिय अभिषेकराज सुध्यान जे जनगावहीं ।
सुखसुयशसम्पतिसुगतिते सियरामप्रदवरपावहीं ॥
सो० । सीताराम चरित्र, बर्णेउँ लघुमतिबालवत ।
सुनहिंसुजन पितुमित्र, बिगरी देहिंसुधारिसब५४॥

अथ श्रीजानकी नौमी माहात्म्य ॥

श्रीजानकी जन्म जग पावन ❀ जेहिदिनभयोसुजनमनभावन
सो जानकी जयन्ती जानै ❀ घटि न रामनवमी ते मानै ॥
सीता राम युगल यक जैसे ❀ युगलजन्म नवमी सम तैसे ॥
दोऊ दिन विधियुत व्रत कीजै ❀ जन्ममहोत्सवरचिसुखलीजै ॥
द्वारन कदलीखम्भ रोपाई ❀ बन्दनवार विचित्र बँधाई ॥
चौक विचित्र पूरि कलसाधरि ❀ ध्वजापताकाविपुलखड़ेकरि ॥
यथाशक्ति बाजन बजवाई ❀ नाच बधाई गान कराई ॥
सन्तन चन्दन पट प्रिय अर्पै ❀ पञ्चामृत आदिक दै तर्पै ॥
दो० । यथाशक्तियहिविधिरचै जानकिजन्मउछाह।
सुजन विनोदितव्रतकरै रामभक्तिकी चाह ५५॥
सिय नौमी माहात्म अपारा ❀ को कहिसकै को पावै पारा ॥
एक सिया नौमी व्रत करई ❀ यथाशक्ति उत्सव सुख भरई ॥
सो जन मुक्तिमुक्ति दोउ पावै ❀ रामउपासक मैं गनि जावै ॥
श्रीजानकि नौमी संयोगा ❀ धोषेहुँ भूखो रहै जो लोगा ॥
सोऊ जीवत में सुख पावै ❀ मरे राम सियधाम सिधावै ॥
भक्तिसहित जानकिव्रत करई ❀ ताकी महिमा कौन उचरई ॥

श्रीजानकि नवमीदिन काहीं ❀ जे जन जाय जनकपुरमाहीं ॥
ब्रत करि जपैं युगलप्रभु नामा ❀ ते दोउ लोक लहैं बिश्रामा ॥
दो० । चैत रामनवमीसरिस जानकिनवमी जानि ।
आयअवधमें ब्रतकरहिं तेप्रियजानकिजानि ५६
शित बैसाख नवमि सीताब्रत ❀ जे उपवासकरहिं प्रतिसम्बत ॥
सरयू अवध जानकी घाटा ❀ सीताकुण्ड तथा सुख ठाटा ॥
अथवा मिथिला कमलाजलमें ❀ कुण्ड उर्बिजा आदि अमलमें ॥
प्रात नहाय भजैं सिय रामा ❀ तेसुखलहि निवसैं प्रभुधामा ॥
श्रीजानकि नवमी ब्रुत नेमा ❀ कतहुँ रहैं ब्रत करैं सप्रेमा ॥
उत्सव रचैं जपैं युग मंत्रा ❀ तिन बस होवैं राम स्वतंत्रा ॥
सीताराम नवमि ब्रत करिकै ❀ उत्सवकरिमनमहँसुखभरिकै ॥
प्रभु प्रतिमा अथवा रामायण ❀ दान करै सियराम पारायण ॥
दो० । तासुमनोरथसबसुफल अवशिकरैंसियराम ।
जीवत सुख पावै मरे सीता रघुबर धाम ॥ ५७ ॥
सियाराम नवमी ब्रतहिं संयम सहित कराहिं ।
तिनकेशतकुलजगतदुख तजिहरिधामहिंजाहिं ॥
अवध सरिस तीरथ जग नाहीं ❀ सरयूसम न सरित जगमाहीं ॥
पूजन योग न गुरुसम लोगू ❀ मातासम कोउ मानन योगू ॥
रामभक्ति सम लाभ न आना ❀ साधन और न ज्ञानसमाना ॥
ईशरूप नहिं राम समाना ❀ रामनाम सम नाम न आना ॥
नवमी ब्रतसम ब्रत न महाना ❀ करतहिं देत परमपद दाना ॥
सो सब ब्रतरत पुण्य परायन ❀ परमजितेन्द्री ज्ञान गुणायन ॥
जो सियराम नवमि ब्रत करई ❀ सियरघुबर सुभक्ति पथ ढरई ॥
तिनके पितर प्रमोद सु लहहीं ❀ मातापिता महादिक कहहीं ॥
दो० । अब हमसब अतिधन्यहैं बसिहैंहरिपुरमाहिं ।
हमरे कुलमें सुजन यक करत नौमिब्रत काहिं ॥

जे जानकि नवमी दिवस दुष्ट अन्नहीं खाहिं ।
नरक कालसूत्रादि में ते भोगहिंदुखकाहिं ॥५८॥

मुनी पराशर आदि महाना ❀ ब्रतनिर्णय यहिभांतिबखाना ॥
माधवशित नवमी दुपहर जब ❀ होइ मघायुत ब्रत करिए तब ॥
मघानखत बिन नवमी देखी ❀ तौ तिथिको ब्रत करै विशेखी ॥
नवमी तिथिकी बृद्धि जो होवै ❀ तौ दुसरे दिन ब्रतशुभ जोवै ॥
नवमी तिथिकी क्षय जब जानै ❀ तब अष्टमि बेधिहुँ ब्रत ठानै ॥
पारन करै जु दशमी माहीं ❀ दशमी तिथि उल्लंघै नाहीं ॥
अहै रामनवमी विधि जैसे ❀ जानकिनवमीब्रत बिधि तैसे ॥
सियब्रत महिमाब्रत सुविधाना ❀ पराशरादिकमुनिकियगाना॥

दो० । बचन सोइ मुनिवरनके भाषा कह्यों बनाय ।
सियरघुबरप्रेमीसुजन सुनहिंगुनहिं सुखपाय ५९

कल्पभेद जस प्रभु अवतारा ❀ तैसहिं जानकि जन्म उदारा ॥
जब बैकुण्ठबिहारी आई ❀ धारहिं रामरूप सुखदाई ॥
तबहिं रमा सीता तनु धारी ❀ करहिंललितलीलासुखकारी ॥
जब नारायण क्षीरधि वासी ❀ धारहिं राम रूप सुख रासी ॥
तब लक्ष्मी श्रीजानकि रूपा ❀ प्रगटहिंमिथिलापुरी अनूपा ॥
जबअज अगुण ब्रह्म श्रीरामा ❀ होहिं कोशलाधीशललामा ॥
करहिं मनुज इवचरित अपारा ❀ जेसुनिनरउतरहिं भवपारा ॥
तबसियआदिशक्तिमहरानी ❀ प्रगटहिंअहलादिनिछबिखानी॥

दो० । जनकभजनतें जनकपुर सो जन्मीसुखरूप ।
तासुजन्म जस कछु कहेउँ कहवाएरघुभूप ॥
प्रगटहोनके हेतु पुनि प्रगट कालको भेद ।
कल्पांतरसो लखिपरतभाषेमुनिनअखेद६०

माधव शितनवमी गुरुवारा ❀ पूर्वा फाल्गुनि नखत पियारा॥

सियप्रगटनमें यहिबिधियोगा ❀ कहे ब्रह्म जामलमुनि लोगा॥
फाल्गुण बदि सातैं बृषलग्ना ❀ तब जन्मी जानकिमुदमग्ना॥
कोउमुनि ऐसो समय सुनायो ❀ कोउफाल्गुणबदिअष्टमिगायो॥
यहिबिधि कल्पांतर मतजानै ❀ सबमुनि बचन सत्यकरिमानै॥
भुवनेश्वर संहिता निहारी ❀ बृहतसु बिष्णुपुराण विचारी॥
जानकिजन्मकहेउँ सुखकारी ❀ लौकिक इवलीला विस्तारी॥
सुनहिं सुजनमन मोदपसारी ❀ कृपाकरहिंमोहिंअनुगबिचारी॥

दो०। हितू गोमतीदासकी प्रेमप्रेरणा पाय।
श्रीजानकियशयथामतिभाषाकहेउँबनाय ६१॥

छं०। नायशिरगुरुसंतपद मैंसरलभाषा रचिदियौ।
सोसुजनक्षमिछलचूकसुनिहैंकृपापरिपूरणहियौ॥
गुरुबिदित रामानन्दस्वामी बेषलहि निजअङ्ग है।
अतिक्रूर सीतारामशरण गुलाम मणिरसरङ्ग है॥

दो०। जयनिषादपतिकेसखा जयतिबिभीषणमीत।
जय जय बानर बंधु जय गीधशबरि सुतप्रीत॥
जयति पतितपावन प्रभो अधम उधारण राम।
शरणागत रसरङ्गमणि पालिय करुणा धाम॥
जयजयश्रीस्वामिनिसियाजगतजननिसुखरूप।
जयति जानकी रामकी प्यारी प्रीति अनूप॥
जय श्रीरघुबर बल्लभा कृपारूपिणी सीय।
मणि रसरङ्गहिं दीजिये राम सख्य कमनीय॥
जय जय श्रीरघुबर सुहृद श्रीगुरु कृपानिधान।
करिय कृपा श्रीराम पद दीजिय प्रीति निदान॥
जयतिभरत जयलखन जयरिपुहन जयहनुमान।

जय सरयू जय अवध जय भक्तिभक्त भगवान ॥

इतिश्री श्रीसम्प्रदाय भूषण श्रीरामानन्दीय स्वामि श्रीराघवेन्द्र सखेत्याख्य श्रीकामदेन्द्रमणि चरण नुग श्रीसीताराम शरण विरचित श्रीसाकेताधिप राजाधिराज श्रीराघवेन्द्रजाया जानकी यशावली सम्पूर्णा ॥

दो० । इकसठ चौपाई अहैं सुभग सोरठा सात ।
दोहा पुनि पञ्चान्नवे आठ छंद सुखदात ॥

अथ श्रीजानकी रसरङ्गाष्टक ॥

नमोस्वामिनीभामिनीरामकांता, सियानामिनीदामिनीदेहभांता
रमावन्दिता नन्दिताभक्तशान्ता, श्रुतिबृंहितासंहिताभिश्चनान्ता
नमोमैथिली निर्मली भूमिकन्या, निमेशाधिराज्ञीसुतामान्यधन्या
सतीनां शिरोरत्न भूषाग्रगण्या, कृता जन्मभूमिर्महा तीर्थ पुण्या
नमोशक्तिशीवा जगज्जीव जीवा, सदारामजीवा कृपालाअतीवा
महासुन्दरी श्रीकरी कम्बुग्रीवा, न यस्यासमा भारती मा रतीवा
नमोरामजायाअमायासदाया, सुशीलासुलीलाविधायास्वछाया
परब्रह्म भा सच्चिदानन्द काया, महामंजु भाषा सुहासा सुभाया
नमो रामवामा सुसामादि गीता, महा सुप्रभा सुप्रभावाविनीता
सदासद्गुणाढ्या गुणत्रय अतीता, षडैश्वर्य्ययुक्ता पराशक्ति सीता
नमोकोशलाधीश सत्केलिकामा, सदाआदिमध्याकिशोरीसुरम्यामा
दृशीखञ्जना रञ्जना रामरामा, मृषा भञ्जना सज्जनानन्द धामा
नमो राघवानन्द दात्री स्वतंत्रा, सुचन्द्रानना मत्त मातङ्ग गंत्रा
रमाधीश पुत्री रमेशास्त्र यंत्रा, जनानां हिता तारकब्रह्म मंत्रा
नमो जानकी प्राणिनां प्राणमूला, पराभक्तिरूपा सुप्रेमानुकूला
सदाशोभिता दिव्य भूषादुकूला, नमो हारिणीभक्तसन्तापशूला

श्लोक । सीताष्टकमिदंपुण्यं प्रेमभक्तिप्रदायकम् ।
येपठन्तिनरानित्यं तेषांरामःप्रसीदति ॥९॥

इतिश्रीरामरसरङ्गमणिविरचिते श्रीजानकीरसरङ्गाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

श्रीसीताराम जन्मबधाई ॥

"श्रीरामजन्म बधाई" ॥ बाजत मंगल मोद बधाई ॥ मंगलरूप रामप्रगटे सँग मंगलमईभए सबभाई ॥ मङ्गल अवधपुरी बीथीजहँ बिहरत शिव भुसुंडि सुखछाई ॥ मङ्गल श्रीअवधेस महामन मोदित पारब्रह्म सुतपाई ॥ मङ्गल सरयू सरि मङ्गलको रूप कौशिला आदिक माई ॥ मङ्गल लहे अवध बासी अति नांचहिं गावहिं बित्त लुटाई ॥ मङ्गलथार लिए ललना गन लखहिं लाल छबि मङ्गल दाई ॥ मङ्गल जातकरम नान्दीमुख श्राध मुनीस सविधि करवाई ॥ मङ्गलबेद मंत्र धुनि करि द्विज मङ्गल आशिष देहिंअघाई ॥ मङ्गल गुनगावहिं सुर सुरतिय हनि दुंदुभी सुमन झरिलाई ॥ मङ्गल दान देहिं नृप हय गज मणि कंचन पट धेनु सुहाई । मङ्गलमोद छके जांचक लहिंफेरि देहिं औरन हरषाई ॥ मङ्गलकलशद्वार द्वारन जन रचे सुमङ्गल चौकपुराई ॥ मङ्गल केसर रङ्ग अरगजा छिरकहिं प्रभुदित लोगलोगाई ॥ मङ्गल पटभूषण पहिरे नट नटी गाय नांचहिं मनभाई ॥ मङ्गल मुद माच्यो कोसलपुर सब गज मुदमङ्गल उमगाई ॥ मङ्गल महि जल अनल पवन नभ मङ्गल दशादिशि देत देखाई ॥ मङ्गल रामभक्ति मांगत रसरङ्गमणी यश मङ्गलगाई ॥ १ ॥ रामलला कि बधैया बाजै ॥ अवधराजके आज भये सुत मानो महामोद घनगाजै । मातुकौशिला कोखि सुफलभइ घरघर अवधसुमङ्गल साजैं ॥ मुदित रामरसरङ्गमणी लखि रघुकुल के सिरताजैं ॥ २ ॥

"रेखता" ॥ बधाई बाजती प्यारी ॥ सुजन मनमोद उदगारी॥ भए अवधेशके लालन ॥ परमप्रिय प्रेम प्रतिपालन ॥ नटैं नट ढाढ़िनी ढाढ़ी ॥ भनैं बिरुदावली गाढ़ी ॥ पढ़ैं मुनि वेद बर बानी ॥ अशीशैं देहिं सुखसांनी ॥ सहेली सोहिलो गावैं । लला मुखदेखि बलिजावैं ॥ लिए मंगल सजे थारी । चलीं सब गावतीं नारी ॥ निरखिसिसु मोद उरभरहीं ॥ निछावर आरती करहीं ॥

दिए बहुदान महराजा । बजैं नभ नगर में बाजा ॥ चहै रति रामके चरणै । सुयश रसरङ्गमणि बरणै ३ ॥ "श्रीजानकी जन्म बधाई ॥ राग बिलावल" ॥ आज महामंगल मिथिलापुर प्रगट भई श्रीजनकलली ॥ घर घर मधुरमनोहर सोहर बजत बधाई रंगरली ॥ नभ सुरसुरी नगर नर नारी नाचहिं गावहिं प्रीति पली ॥ धनि बैसाख पाख सित नौमी धन्य योग ग्रह बार बली॥ सहित बिदेह सनेह सुकृत तरुबेलि सुनैना कोखिफली ॥ साजि सुमङ्गल थार सुन्दरी भूप भवन उर उमगि चलीं ॥ सुतासलोनी लखि न्योछावरि करहिं देहिं आशिष अवली ॥ सतानन्द सानन्द द्विजनयुत भनत वेदधुनि भांति भली ॥ जयजय कहि ब्रह्मादि देवबर बरषहिं सुरतरु सुमन दली ॥ दिए दान सीरध्वज जाँचक लहि यशगावत गलीगली ॥ सतानन्द नारद सुनाम धरि कहत सिया कीरति धवली ॥ होई माणि रसरङ्ग स्वामिनी रामभँवरकी कञ्जकली ॥ ४ ॥

रागसामकल्यान ॥

लोनी बधाई जनक ललीकी ॥ बाजति सुखभाजति संतन उरसुभग सुनैना कोंखि फलीकी । रघुनन्दन आनन्द बढ़ावनि मुनिमन भावनि भागभलीकी ॥ अलि गावहिं नाचहिं नइ नइ गति जाँचहिं प्रीतिसुयश धवलीकी । देव दुन्दुभी हनि हर्षहिं करि बर्षा सुरतरु सुमनकलीकी । लहत गाय रसरङ्गमणी यश बिहरनि रघुबर भक्तिगलीकी ॥ ५ ॥ जनकललीकी बजत बधाई ॥ प्रीतिपरस्पर चहुँदिशिछाई ॥ नभगत सुर बर्षत प्रसून कलगान करत गन्धर्व सुनाई ॥ निमिबंसिनि समशील सविधि साजि बधुन सहित नृपमन्दिर आईं ॥ निरखि कुवँरि बदनारबिन्द छबि बिसरी सुधिबुधि बित प्रभुताई । दससत शक्र धनद दससत बित दससत चन्द्रन वारि सिहाई ॥ केहि पटतरिय कुवँरिसम्भव गुण अमितरूप छबि अमित बड़ाई ॥ कामदेन्द्र रघुराज कुवँरसम हय

15199

उपमा श्रुति सम्मत गाई ॥ ६ ॥ निमि नृपसदन बधावनी मृदु बाजै रवेली । मिथिलापति देवीकी दरसी कीरति फलित सुवेली ॥ प्रगटे ग्रहग्रह सुरतरु नवनिधि चिन्तामणि अलवेली । देस देस की नृपमहिषी सब गावहिं गीत नवेली ॥ कामदेन्द्र श्रीअवध-राजगृह पहुँची खबरिसवेली ॥ ७ ॥ मिथिलाकी बधाई रँगबरसै । श्रीसीरध्वज महाराज गृह लली प्रगट भइँ मुद सरसै ॥ हाटक-मनि मुक्ता पट भूषण देत दान नृप माणि दरसैं ॥ न्योछावरि नानासम्पति करि निरखि ललीमुख पद परसैं ॥ कामदेन्द्र निमि पतिपुर गृहकी रचना लखि बिधि मन तरसैं ॥ ८ ॥

"रेखता" ॥ लोनी बधाई बाजती । सुख घन घटाजनु गाज-ती ॥ सीता सुता जगवंदिनी ॥ प्रगटी जनक नृप नंदिनी ॥ गा-तीं सुमङ्गल नारियां ॥ जातीं ललीपै वारियां ॥ ठाढ़ी नटी नट नाचहीं ॥ पावैं सोई जोई जांचहीं ॥ सुरतरु सुमन सुर वर्षहीं ॥ निमिवंस यशकहि हर्षहीं ॥ जयजय सियाके तातकी ॥ जयजय सुनयना मातकी ॥ मुनि बेदकी धुनि छावहीं ॥ कर देखि लक्षण गावहीं ॥ होइहैं रघूत्तमभामिनी ॥ रसरङ्गमणिकी स्वामिनी ॥ १ ॥

विज्ञापन ।

"श्रीभक्तमाल" का "भक्तिसुधाबिन्दु स्वाद" नाम तिलक, ७२ (बहत्तरवें) कवित्त तक का, मूल समेत, और "श्रीवैष्णव नामावली" सहित, छपकर प्रकाशित हुआहै । भगवत् कृपासे अपने पूरा २ पता समेत, १।) कामनीआर्डर भेजनेवाले महा-शय डांकद्वारा पासकते हैं ॥

उपाध्याय हरिहरशरण शर्म्मा
प्रमोदबन बड़ी कुटिया
श्रीअयोध्या जी ।

श्रीरामरसरङ्गमणिजी कृत ग्रंथों का, नाम, दाम, मिलने का ठिकाना।

श्रीरामस्तवराज सटीक	।=)	श्रीसरयूरसरङ्ग लहरी	=)
श्रीरासलीलासम्बाद	।=)	श्रीसीतारामसुखमा बिलास	=)
श्रीध्यानमञ्जरी सटीक	=)	श्रीसीताराम वर्षबिलास	=)॥
श्रीसीतारामशोभावली / श्रीरामप्रेमपदावली	=)॥	श्रीसीतारामझूलाबिलास	~)
श्रीरामनामयशबिलास	=)	श्रीरामप्रियपञ्चरत्न	~)

छोटेलाल—लक्ष्मीचन्द

बम्बई

बुकसेलर अयोध्या जी

जिला फैजाबाद

हरप्रकार की पुस्तकें निम्न लिखित पते पर मिलसकती हैं।

प्रबोधचन्द्रोदय नाटक	॥)	सुखबिलास	।)
भगवतमङ्गल	।=)	पद्मासुन्दरी [उपन्यास]	॥=)
दुर्गासप्तशती [मोटे अक्षरों में]	।=)	वाशिष्ठीहवनपद्धति	।)
सत्यनारायण सटीक	=)	सिंहासन बत्तीसी	।~)
तथा मूल	~)॥	रामानन्द यशावली	~)
बैताल पचीसी	।)	जनक फुलवारी ललितकृत	=)
अर्जुन गीता	=)	सूर्यपुराण	)।।
विष्णु सहस्रनाम	=)	हनुमान चालीसा	
रामायण सुन्दर काण्ड	~)	रामस्तवराज स्तोत्र	
शम्भु पचीसी	)॥।	सतपञ्चार्थप्रकाश	=)
मुकुन्दमाला स्तोत्र	)॥	बालचिकित्सा	॥~)

प्रोप्राइटर सेठ टीकारामजी

"ज्ञानभास्कर" प्रेस

बाराबंकी।